❀ सर्वभूतहितेरताः ❀

श्रीपुष्पदन्तविरचितम्

शिवमहिम्नः स्तोत्रम्

आरती, पुष्पाञ्जलि, मन्त्र, ध्यान एवं रुद्राष्टकम् सहित

ब्रह्मलीन महामण्डलेश्वर
श्री स्वामी शुकदेवानन्द सरस्वती जी महाराज
परमार्थ निकेतन, स्वर्गाश्रम, ऋषिकेश

शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय ॥
मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय
नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय ।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय
तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय ॥
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द
सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय
तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय ॥
वशिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य-
मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय ।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय
तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय ॥
यक्षस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय ॥
पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥

निकेतन
स्तकालय

श्रीपुष्पदन्तविरचितम्

शिवमहिम्नः स्तोत्रम्

मन्त्र, पुष्पाञ्जलि, आरती, ध्यान एवं रुद्राष्टकम् सहित

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ ब्रह्मलीन महामण्डलेश्वर
श्री स्वामी शुकदेवानन्द सरस्वती जी महाराज
परमार्थ निकेतन, स्वर्गाश्रम (ऋषिकेश)

त्रयोदशी शिवरात्रि | सम्वत् २०४१ | मूल्य—१)

प्रकाशक—
परमार्थ पुस्तक भंडार
हरिधाम आश्रम,
बिठूर, कानपुर, (उ० प्र०)

मुद्रक—

प्राक्कथन

भगवान् आशुतोष शंकर अवढरदानी ही ठहरे, उनकी तनिक कृपाकोर एवं प्रसन्नता सांसारिक दावानल को तुरन्त शान्त करके कल्याणदायिनी है। इस स्तोत्र के नित्य-पाठ व श्रवण से भक्तों के सब कष्ट दूर हो जाते हैं। इस सम्बन्ध में स्तोत्र के ३८ वें श्लोक की सुप्रसिद्ध गाथा का उल्लेख पढ़ने से ज्ञात होता है कि किस प्रकार गंधर्व-राज पुष्पदन्त जी का घोर अपराध क्षमा करके भगवान शंकर ने उन्हें अभय कर दिया।

घटना इस प्रकार है कि भोग-विलासप्रिय, देवताओं के मनोरंजनकारी वाद्य-विद्या में पारंगत गंधर्वों की एक योनि होती है, उसके राजा का नाम पुष्पदन्त था। यह गंधर्वराज, देवाधिदेव भोलेबाबा के अनन्य भक्त थे। उनकी सेवा-पूजा के लिये पुष्प-विल्वपत्र, आक, धतूरा आदि सभी को चाहिये; परन्तु श्री पुष्पदन्त जी को सुन्दर-सुन्दर पुष्पों को चढ़ाने की मानो लत थी, इसीलिये वे पृथ्वीपति के बगीचे से चुपके से सब सुन्दर पुष्पों को तोड़ लेते और भगवान् शंकर को अर्पण करके देवलोक में चले जाते थे। इस प्रकार नित्यप्रति बगीचे के सब पुष्पों का टूट जाना राजा को बहुत खराब लगता। उसने अनेकों उपाय किये, गुप्तचरों को भी लगाया, परन्तु सब बेकार हुआ, क्योंकि अदृश्य रहने की विद्या जानने

से गंधर्वराज को कोई पकड़ न सका। अन्त में तंग आकर राजा ने विद्वानों की सम्मति चाही। तदनन्तर तय हुआ कि—"शिवलिङ्ग पर चढ़े हुए विल्वपत्र-पुष्पादि को बगीचे में आसपास बिखेर दिया जाये, उन पर पैर पड़ते ही चोर के अदृश्य रहने की शक्ति नष्ट हो जायगी और वह पकड़ा जा सकेगा।" पश्चात् श्री पुष्पदन्त जी आये और शिवजी के प्रेम में इतने तन्मय रहे कि नीचे बिखरे हुए शिव-निर्माल्य पर पैर पड़ने का पाप एवं अदृश्य-विद्या के नष्ट होने का उन्हें ज्ञान भी न हुआ, फलतः उस विद्या का प्रभाव जाता रहा। अब तो वे बहुत घबराये, परन्तु ध्यान हुआ कि भगवान् शंकर के शाप से ही यह दशा हुई है, इसके मोचन का एकमात्र उपाय बमभोले की प्रसन्नता ही है। अतः आशुतोष शंभु को प्रसन्न करने के लिये वे वहीं बैठ गये और उसी समय "श्री शिवमहिम्न स्तोत्र" की रचना की। स्तोत्र-पाठ के गान से भोले बाबा प्रसन्न हो गये और उनकी विद्या उन्हें लौटा दी।

भगवान् शंकर की प्रसन्नता के लिये इस स्तोत्र को भाई बहनों को कंठस्थ कर लेना चाहिए तथा सबको इस स्तोत्र का पाठ करना चाहिये।

इसका खूब प्रचार करना चाहिए। इस स्तोत्र को छपवाकर शिवभक्तों में बाँटने से बहुत पुण्य होता है।

—स्वामी शुकदेवानन्द

दो शब्द

प्रस्तुत पुस्तक ब्रह्मलीन गुरुदेव महामण्डलेश्वर श्री स्वामी शुकदेवानन्द सरस्वती जी महाराज की प्रेरणा से पहले प्रकाशित हुई थी। भक्तों में इसका व्यापक प्रचार-प्रसार होने से अब यह पुस्तक समाप्तप्राय है। इसके प्रकाशन की सामयिक आवश्यकता का अनुभव करते हुए ब्रह्मलीन श्री स्वामी प्रकाशानन्द सरस्वती जी महाराज के कुछ भक्तों ने भगवत् प्रेरणा से इस के प्रकाशन में सहयोग दिया है। वे सभी इसके लिये धन्यवाद के पात्र हैं।

भक्तों के समक्ष संशोधित रूप में पुस्तक को प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। यह पुस्तक सभी भगवत्-प्रेमियों के लिये उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसी आशा है।

स्वामी असङ्गानन्द सरस्वती
वेदान्त-साहित्याचार्य (एम० ए०)
परमार्थ निकेतन, स्वर्गाश्रम
ऋषिकेश

रुद्राष्टकम्

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं । विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं ॥
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं । चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं ॥
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं । गिरा ग्यान गोतीतमीशं गिरीशं ॥
करालं महाकाल कालं कृपालं । गुणागार संसार पारं नतोऽहं ॥
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं । मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं ॥
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा । लसद्भाल बालेन्दु कंठे भुजंगा ॥
चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं । प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं ॥
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं । प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥
प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं । अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं ॥
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं । भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं ॥
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी । सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ॥
चिदानन्द संदोह मोहापहारी । प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं । भजंतीह लोके परे वा नराणां ॥
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं । प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं ॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजां । नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं ॥
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं । प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो ॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥

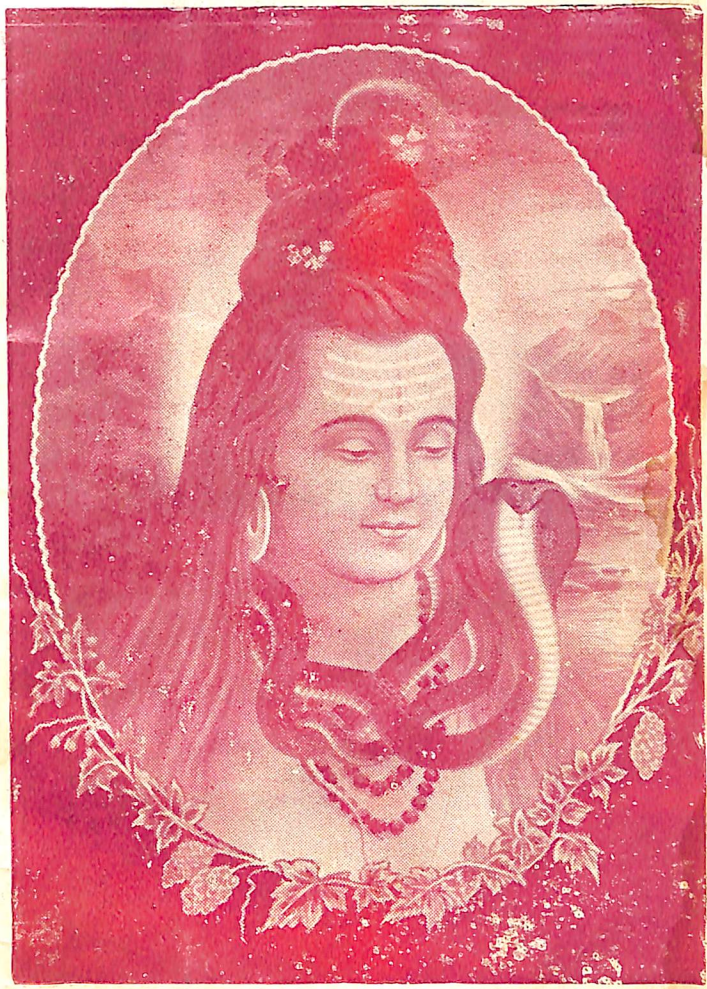

आशुतोष देवाधिदेव भगवान शङ्कर

प्रातःस्मरणीय सद्गुरुदेव

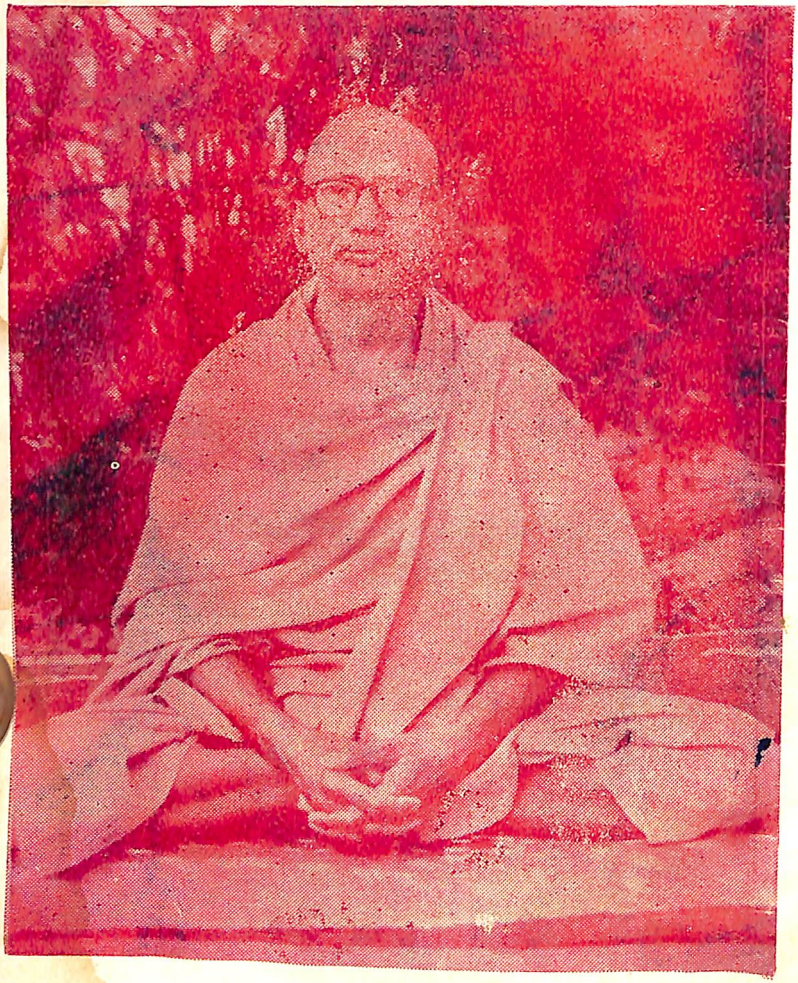

अनन्त श्री विभूषित
श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ ब्रह्मलीन
श्री १०८ श्री स्वामी प्रकाशानन्द सरस्वती जी महाराज

प्रकाशकीय

श्री सद्गुरुदेव की प्रेरणा से 'शिवमहिम्न स्तोत्र' पांच वर्ष पहले प्रकाशित हुआ था। इसकी सारी प्रतियाँ समाप्त हो गयीं; अतः पुनर्प्रकाशन की आवश्यकता आ बनी। इस बार आदरणीय श्री स्वामी असङ्गानन्द सरस्वती जी महाराज के सुझावानुसार केवल मूल-पाठ का ही प्रकाशन कराया गया है। क्योंकि स्तोत्र पाठ के समय पाठक का ध्यान भावार्थ की ओर नहीं जाता। इसी कारण इस प्रकाशन में भावार्थ पृथक् कर दिया गया है। आशा है देवाधिदेवशंकर की उपासना में श्रद्धालु उपासक प्रस्तुत 'शिवमहिम्न स्तोत्र' से लाभान्वित होंगे।

स्वामी श्यामस्वरूपानन्द सरस्वती

अध्यक्षः—हरिधाम आश्रम

बिठूर (कानपुर)

आरती

जय शिव ओंकारा, भज शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्द्धाङ्गी धारा ॥ १ ॥
ॐ हर हर हर महादेव ॥
एकानन चतुरानन, पञ्चानन राजै।
हंसासन गरूड़ासन, वृषवाहन साजै ॥ २ ॥ ॐ हर हर···
दो भुज चारु चतुर्भुज, दशभुज अति सोहै।
तीनों रूप निरखते, त्रिभुवन-जन मोहै ॥ ३ ॥ ॐ हर हर···
अक्षमाला वनमाला, मुण्डमाला धारी।
त्रिपुरारी कंसारी, करमाला धारी ॥ ४ ॥ ॐ हर हर···
श्वेताम्बर पीताम्बर, बाघाम्बर अङ्गे।
सनकादिक गरुड़ादिक, भूतादिक सङ्गे ॥ ५ ॥ ॐ हर हर···
कर मध्ये सुकमण्डलु, चक्र शूलधारी।
सुखकारी दुखहारी, जग-पालनकारी ॥ ६ ॥ ॐ हर हर···
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित, ये तीनों एका ॥ ७ ॥ ॐ हर हर···
त्रिगुणस्वामि की आरति, जो कोई नर गावै।
कहत शिवानन्द स्वामी, मनवांच्छित पावै ॥ ८ ॥ ॐ हर हर···

शान्तिपाठः

ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः । शं नो भवत्वर्यमा । शं न इन्द्रो बृहस्पतिः । शं नो विष्णुरुरुक्रमः । नमो ब्रह्मणे । नमस्ते वायो । त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि । त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि । ऋतं वदिष्यामि । सत्यं वदिष्यामि । तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु । अवतु माम् । अवतु वक्तारम् ॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।

स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाँ सस्तनू भिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः, स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः, स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

ॐ यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं, यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै ।

तं ह देवमात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुर्वैशरणमहं प्रपद्ये ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

❀ श्री गणेशाय नमः ❀

गजाननं भूतगणाधिसेवितं
कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम् ।
उमासुतं शोकविनाशकारकं
नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम् ॥

—: ॐ नमः शिवाय :—

अथ शिव-महिम्नःस्तोत्रं प्रारभ्यते

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः ।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ॥ १ ॥

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो-
रतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि ।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥ २ ॥

मधुस्फीता वाचः परममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम् ।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता ॥ ३ ॥

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु ।
अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ॥ ४ ॥

किमीहः किंकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च ।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन् मुखरयति मोहाय जगतः ॥ ५ ॥

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता-
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति ।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ॥ ६ ॥

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च ।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥ ७ ॥

महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम् ।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति तु भवद्भ्रू प्रणिहितां
न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥ ८ ॥

ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये ।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव
स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननुधृष्टामुखरता ॥ ९ ॥

तवैश्वर्यं यत्नाद् यदुपरि विरिञ्चिर्हरिरधः
परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः ।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरीश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ॥ १० ॥

अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं
दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान् ।
शिरःपद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम् ॥११॥

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
बलात् कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः ।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ॥१२॥

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सती-
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः ।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयो-
र्न कस्याउन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥१३॥

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा-
विधेयस्यासीद् यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः ।
[illegible] कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः ॥१४॥

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः ।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः ॥१५॥

मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद् भुजपरिघरुग्णग्रहगणम् ।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद् रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ॥१६॥

वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते ।
जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि—
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः ॥१७॥

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति ।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि—
र्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः ॥ १

हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलम् ।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ॥१९॥

क्रतौ सुप्ते जाग्रत् त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते ।
अतस्त्वां संप्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः ॥२०॥

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता-
मृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः ।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुःश्रद्धा विधुरमभिचाराय हि मखाः ॥२१॥

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा ।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ॥२२॥

स्वलावण्याशंसाधृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि ।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्धघटना-
दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः ॥२३॥

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः ।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मङ्गलमसि ॥२४॥

मनः प्रत्यक् चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः ।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्ज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत् किल भवान् ॥२५॥

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च ।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि ॥२६॥

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा-
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृति ।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम् ॥२७॥

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ।
अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रविहितनमस्योऽस्मि भवते॥२८॥

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः ।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमितिसर्वाय च नमः ॥२९॥

बहलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमोनमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमोनमः ।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमोनमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमोनमः ॥३०॥

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्
वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ॥ ३१ ॥

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥ ३२ ॥

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले-
र्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य।
सकलगणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ॥ ३३ ॥

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् यः।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्च ॥ ३४ ॥

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः ।
महिम्नः स्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥३५॥

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम् ।
अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम् ॥३६॥

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः ।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥३७॥

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शिशुशशिधरमौलेर्देवदेवस्य दासः ।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षीद् दिव्यदिव्यं महिम्नः ॥३८॥

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः ।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ॥३९॥

श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन
स्तोत्रेण किल्बिषहरेण हरप्रियेण ।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ॥४०॥

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते ॥४१॥

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः ।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदा शिवः ॥४२॥

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वरः ।
यादृशोऽसि महादेव ! तादृशाय नमोनमः ॥४३॥

॥ शिव-नाम सङ्कीर्तनम् ॥

महादेव शिवशङ्कर शम्भो उमाकान्त हर त्रिपुरारे ।
मृत्युञ्जय वृषभध्वज शूलिन् गङ्गाधर मृड मदनारे ॥

हर शिव शङ्कर गौरीशं, वन्दे गङ्गाधरमीशम् ।
रुद्रं पशुपतिमीशानं, कलये काशीपुरिनाथम् ॥

जय शम्भो, जय शम्भो, शिव गौरीशङ्कर जय शम्भो ।
जय शम्भो, जय शम्भो, शिव गौरीशङ्कर जय शम्भो ॥

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

ॐ शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः

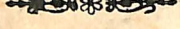

❋ श्री पुष्पाञ्जलिस्तोत्रम् ❋

अथ मन्त्रपुष्पाञ्जलिः

हरिः ॐ

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये,
सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे ।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते,
सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः ॥१॥

विष्णुब्रह्मेन्द्रदेवै रजतगिरि-
तटात्प्रार्थितो योऽवत्तीर्य,
शाक्याद्युद्दामकण्ठीरवनखर-
कराघातसञ्जातमूर्च्छाम् ।
छन्दोधेनुं यतीन्द्रः
प्रकृतिमगमयत्सूक्तिपीयूषवर्षैः,
सोऽयं श्रीशङ्करार्यो
भवदवदहनात्पातु लोकानजस्रम् ॥२॥

पूर्णः पीयूषभानुर्भवमरुतपनो-
द्दामतापाकुलानां,
प्रौढ़ाज्ञानान्धकारावृतविषमपथ-
भ्राम्यतामंशुमाली।
कल्पः शाखी यतीनां विगत-
धनसुतादीषणानां सदा नः,
पायाच्छ्रीपद्मपादादिममुनि-
सहितः श्रीमदाचार्यवर्यः ॥३॥

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम्
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादि लक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥४॥

नारायणं पद्मभवं वसिष्ठं
शक्तिं च तत्पुत्रपराशरं च।
व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं
गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यम् ॥५॥

श्रीशङ्कराचार्यमथास्य पद्मपादं
च हस्तामलकं च शिष्यम् ।
तं तोटकं वार्तिककारमन्या—
नस्मद्गुरून्सन्ततमानतोऽस्मि ॥६॥

विश्वं दर्पणदृश्यमाननगरीतुल्यं निजान्तर्गतं
पश्यन्नात्मनि मायया बहिरिवोद्भूतं यथा निद्रया ।
यः साक्षात्कुरुते प्रबोधसमये स्वात्मानमेवाद्वयं
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥७॥

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥८॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥९॥

श्रुतिस्मृतिपुराणानामालयं करुणालयम्
नमामि भगवत्पादं शङ्करं लोकशङ्करम् ॥१०॥

शङ्करं शङ्कराचार्यं केशवं बादरायणम् ।
सूत्रभाष्यकृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः ॥११॥

ईश्वरो गुरुरात्मेति मूर्तिभेदविभागिने ।
व्योमवद्व्याप्तदेहाय दक्षिणामूर्तये नमः ॥१२॥

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि
धर्म्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त
यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥१३॥

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने ।
नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे ॥१४॥

स मे कामान् कामकामाय मह्यम् ।
कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ॥१५॥

कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ॥१६॥

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो
विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात् ।
सम्बाहुभ्यां धमति संपत-
त्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः ॥१७॥

०—❀❀❀❀—०

नानासुगन्धिपुष्पाणि
यथाकालोद्भवानि च ।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो
गृहाण परमेश्वर ॥

—: शिव आप बसे वीराने में :—

धन-धन भोलेनाथ सदाशिव, कमी नहीं है खजाने में।
तीन लोक बस्ती में बसा, शिव आप बसे वीराने में॥

जटा जूट शिर गंगा शंकर, गले में रुन्डन की माला।
माथे चन्दा होय रे, सागर कृपालु का है प्याला॥

जिस को देख लें भय व्यापे, गले में नागन की माला।
तीसरे नेत्र में है तुम्हारे, तीन लोक का उजियाला॥

पीने को हर वक्त भंग सदा, आक धतूरा खाने को।
तीन लोक बस्ती में बसा, शिव आप बसे वीराने में॥

नाम आपके अनेक शंकर जी, सबसे उत्तम है चंगा।
यही तो आपकी माया ठहरी, जटा बीच में है गंगा॥

भूत प्रेत वेताल नाथ जी, यह लश्कर सब में चंगा।
तीन लोक हर के विधाता, शिव आप बने हो भिखमंगा॥

हमें यही समझाओ नाथ, क्या मिलता अलख जगाने में।
तीन लोक बस्ती में बसा, शिव आप बसे वीराने में॥

परमपूज्य ब्रह्मलीन श्री १०८ श्री स्वामी प्रकाशानन्द सरस्वती जी महाराज, हरिधाम आश्रम, बिठूर (कानपुर) द्वारा रचित अनुपम साहित्य

१. आनन्द प्रकाश	...	...	३.००
२. शान्ति दर्शन	...	...	४.००
३. सुख दर्शन	...	...	३.००
४. भक्ति दर्शन	...	...	२.००
५. जीवन ज्योति	...	...	३.००
६. पूर्ण सुख शान्ति के उपाय		...	०.३

स्वामी श्यामस्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज द्वारा प्रस्तुत उपयोगी साहित्य

१. वैराग्य प्रकाश	...	...	४.००
२. स्वस्थ रहने की कला	...	...	३.००
३. साधना के मार्ग (कम खांय गम खांय)			(प्रेस में)
४. ब्रह्मावर्त और हरिधाम	...	...	५.००
५. दैनिक प्रार्थना भजन एवं सदुपदेश संग्रह			०.७५

पुस्तक प्राप्ति स्थान :—

१. व्यवस्थापक—प्रकाशन विभाग
परमार्थ निकेतन, स्वर्गाश्रम, ऋषीकेश

२. व्यवस्थापक—परमार्थ पुस्तक भण्डार
हरिधाम आश्रम, बिठूर (कानपुर)